गद्यांश 18

मनु भगवान ने स्पष्ट कहा है—जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। स्त्रियाँ समाज का निर्माण करती हैं। अत: यदि स्त्रियों की शिक्षा न हुई तो समाज में अशांति का वातावरण फैलना स्वाभाविक है। यदि मनुष्य जाति उन्नति चाहती है, तो पहले नारी को शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक सभी दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण और सुविकसित बनाना होगा, तभी मनुष्यों में सबलता, सक्षमता, सद्‌बुद्धि, सद्‌गुण और महानता के संस्कारों का उदय हो सकता है। हमारा देश, समाज, जाति तब तक सच्चे अर्थों में विकसित नहीं कहे जा सकते, जब तक नारी को भी नर के समान ही क्रियाशीलता और प्रतिभा प्रकट करने का अवसर न मिले। पत्नी मनुष्य की अर्धांगिनी होती है। कोई यज्ञ अथवा धार्मिक कृत्य उसके बिना सफल नहीं होता। अनेक उदाहरण हैं, जिनमें भक्ति और पवित्रता के कारण पत्नी अपने पति की गुरु बन जाती है। काल के प्रभाव से भारतीय नारी का प्राचीन आदर्श बहुत परिवर्तित हो गया है, तो भी प्राचीन संस्कारों के कारण अब भी भारतीय नारी में जो विशेषताएँ मिलती हैं, संसार के किसी भी अन्य भाग में मिल सकना असंभव है। आज भी भारतीय नारी में जितना सतीत्व, श्रद्धा, त्याग का भाव पाया जाता है, उसका उदाहरण किसी भी देश में मिल सकना कठिन है। मानव धर्म का सच्चे अर्थ में केवल वही पालन कर सकती है।

प्रश्न

I. मनुष्य जाति की उन्नति के लिए क्या आवश्यक है? (2)

II. नारी शिक्षा का महत्त्व स्पष्ट कीजिए। (2)

III. उपरोक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या हो सकता है? तर्कसहित बताइए। (2)

IV. 'स्वाभाविक' और 'सद्‌बुद्धि' शब्दों में से उपसर्ग व मूल शब्द अलग-अलग कीजिए। (1)

V. स्त्रियों के संबंध में मनु का क्या कथन है? (1)

Scanned with CamScanner

गद्यांश 19

नीतिशास्त्र में धन-संपत्ति आदि को ही 'अर्थ' कहा गया है। बहुत से ग्रंथों में अर्थ की प्रशंसा की गई है, क्योंकि सभी गुण अर्थ अर्थात् धन पर ही आश्रित रहते हैं। जिसके पास धन है वही सुखी रह सकता है, विषय-भोगों को संगृहीत कर सकता है तथा दान-धर्म भी निभा सकता है। वर्तमान युग में धन का सबसे अधिक महत्त्व है। आज हमारी आवश्यकताएँ बहुत बढ़ गई हैं, इसलिए उनको पूरा करने के लिए धन-संग्रह की आवश्यकता पड़ती है।

धन की प्राप्ति के लिए भी अत्यधिक प्रयत्न करना पड़ता है और सारा जीवन इसी में लगा रहता है। कुछ लोग तो धनोपार्जन को ही जीवन का उद्देश्य बनाकर उचित-अनुचित साधनों का भेद भी भुला बैठते हैं। संसार के इतिहास में धन की लिप्सा के कारण जितनी हिंसाएँ, अनर्थ और अत्याचार हुए हैं, उतने और किसी दूसरे कारण से नहीं हुए हैं। अत: धन को जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य नहीं माना जा सकता, क्योंकि धन अपने आप में मूल्यवान वस्तु नहीं है।

धन को संचित करने के लिए छल-कपट आदि का सहारा लेना पड़ता है, जिसके कारण जीवन में अशांति और चेहरे पर विकृति बनी रहती है। इतना ही नहीं इसके संग्रह की प्रवृत्ति के पनपने के कारण सदा चोर, डाकू और दुश्मनों का भय बना रहता है। धन का अपहरण या नाश होने पर कष्ट होता है। इस प्रकार अशांति, संघर्ष, दुष्प्रवृत्ति, दु:ख, भय एवं पाप आदि का मूल होने के कारण, धन को जीवन का परम लक्ष्य नहीं माना जाता है।

प्रश्न

I. धन संचय की प्रवृत्ति बढ़ने का क्या कारण है? (2)

II. धन संचय की प्रवृत्ति के क्या दुष्परिणाम होते हैं? (2)

III. धन को परम लक्ष्य क्यों नहीं माना जा सकता? (2)

IV. 'संगृहीत' व 'धनोपार्जन' शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए। (1)

V. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक बताइए। (1)

Scanned with CamScanner